

“ छत्तीसगढ के ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थल “

बस्तर

शासकिय दुग्धाधारी बजरंग महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रायपुर
छत्तीसगढ (स्वायत्तशासी संस्था)



**इतिहास विषय मे एम. ए. उपाधि हेतु प्रस्तुत
परियोजना - प्रबंध 2024**

निर्देशक

डॉ. सरिता दुबे

सहायक प्राध्यापक

इतिहास विभाग

शा.दू.ब.महिला स्नातकोत्तर

महाविद्यालय,रायपुर (छ.ग.)

प्रस्तुतकर्ता

तान्या वर्मा

एम. ए.

इतिहास विभाग

शा.दू.ब.महिला स्नातकोत्तर

महाविद्यालय,रायपुर (छ.ग.)

)

इतिहास विभाग

शासकिय दुग्धाधारी बजरंग महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रायपुर
छत्तीसगढ (स्वायत्तशासी संस्था)

प्रस्तावना

बस्तर छत्तीसगढ़ का एक महत्वपूर्ण संभाग है। इसके इतिहास का अध्ययन इसलिए आवश्यक है क्योंकि वह संपूर्ण इतिहास को जोड़ने वाली कड़ी है। क्षेत्रीय इतिहास की जानकारी राष्ट्रीय चेतना की आधारशिला होती है। ज्ञान के अभाव में विद्वानों ने बस्तर को भारत का सोया हुआ दैत्य कहा है। प्राचीन काल में यह अंचल वत्सर, दंडकारण्य, महाकांतर, चक्रकूट, भ्रमरकूट आदि नामों से प्रसिद्ध रहा। अपनी सांस्कृतिक, पुरातात्विक तथा भौगोलिक विशिष्टताओं के कारण यह संभाग सभी के लिए आकर्षण का केंद्र है। वस्तुतः बस्तर एक अतृप्त जिज्ञासा है जिसमें आदिम मानव की प्राचीन संस्कृतियों का स्पंदन है, तो आधुनिक युग के आगमन की दस्तक भी है।

बस्तर की राजनीतिक धरा में नल, गंग, छिंदकनाग व काकतीय राजवंश का वर्चस्व रहा। मराठे और अंग्रेजी सत्ता समयानुसार इन पर नियंत्रण रखते रहे। भारत की स्वतंत्रता के पश्चात जनवरी 1948 में बस्तर और कांगेर रियासतों को मिलाकर बस्तर जिले का निर्माण किया गया तथा 20 मार्च 1981 को इसे संभाग का दर्जा दिया गया। वर्तमान में इस संभाग में 7 जिले तथा 32 तहसीलें और 32 विकास खंड हैं। अपनी अपार वन एवं खनिज संपदा, जलप्रपातों, गुफाओं और जनजातियों के कारण बस्तर संभाग न केवल देश में, वरन् विदेशों में भी प्रसिद्ध है। बस्तर का जनजीवन और उनका प्राचीन परंपरावादी प्रवाह अपनी सांस्कृतिक जीवन की अविरलता को अक्षुण्ण बनाए हुए है। यद्यपि विकासात्मक प्रकाश की किरणें बस्तर की दहलीज पर अब दस्तक देने लगी हैं, तथा शीघ्र एक नए बस्तर का जन्म अवश्यंभावी है फिर भी इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि बस्तर भारत की पुरातन संस्कृति की धरोहर है।

बस्तर: राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास बस्तर संभाग संबंधी समस्त जानकारियों को एक स्थल पर प्रस्तुत करने का एक प्रयास है। यह पुस्तक भारत के अत्यंत पिछड़े माने जाने वाले आदिवासी अंचल 'बस्तर' के राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास को प्रस्तुत करती है। इसमें बस्तर के आदिवासियों का साम्राज्यवादी ताकतों तथा सरकारी तंत्र के भ्रष्टाचार व शोषण की नीतियों के विरुद्ध संघर्ष एवं विद्रोह और स्वतंत्रता के पश्चात बस्तर की स्थिति का विवरण शामिल किया गया है। बस्तर के आदिवासियों ने प्रकृति प्रेम के साथ-साथ देश की स्वतंत्रता की भावना को भी जागृत किया है। बस्तर में हुए 1876 का मुरिया विद्रोह एवं 1910 का भूमकाल विद्रोह तो राष्ट्रीय जनजागरण का एक अनन्य हिस्सा रहा है जिसका उल्लेख भारतीय इतिहास में बहुत कम मिलता है जिन पर इस पुस्तक में पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।